रक्षाबन्धन के पावन पर्व की शुभ बधाईयां – मधुर याद पत्र

पवित्रता के सागर, प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा लगन की अग्नि में अपने पुराने संस्कारों की सम्पूर्ण आहुति दे, बाप समान सम्पन्न सम्पूर्ण बन नई दुनिया को समीप लाने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण, राजयोगी भाई-बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर यादप्यार के साथ रक्षाबन्धन के पावन पर्व की बहुत-बहुत बधाई हो।

बाबा बोले, मीठे बच्चे अब अपने योग की लगन को ऐसा अग्नि रूप बनाओ जिस अग्नि में सर्व व्यर्थ संकल्प, सर्व कमजोरियां व रहे हुए सब पुराने संस्कार भस्म हो जाएं। अब इस अश्वमेध रूद्र ज्ञान महायज्ञ में ऐसी महा आहुति सामूहिक रूप में डाल संस्कारों का ऐसा शुद्धिकरण करो जो यह दु:खमय पुराना संसार नये सुख शान्तिमय संसार में परिवर्तन हो जाए।

बोलो, मीठे-मीठे भाई बहिनें ऐसे सच्चे दिल की लगन से योग तपस्या कर रहे हो ना! अभी तो नज़रों के सामने इस कलियुगी दुनिया की विदाई के सभी चिन्ह दिखाई दे रहे हैं। यह दुनिया जायेगी और हमारी नई दुनिया आयेगी। मीठा बाबा अव्यक्त-वतन से हम बच्चों की दिव्य पालना करते, सर्व शक्तियों का वरदान दे समर्थ बनाए उड़ती कला में उड़ा रहे हैं।

रक्षाबन्धन का यह अलौकिक पर्व एक ओर अनेक आत्माओं को स्नेह सूत्र में बांधने, उन्हें ईश्वरीय सन्देश देने का यादगार पर्व है। साथ-साथ मन-वचन-कर्म-सम्बन्ध, सम्पर्क से सम्पूर्ण वफादार बन, सब कुछ सफल करने व स्वयं को सम्पूर्ण पावन बनाने के लिए दृढ़ता सम्पन्न संकल्प करने का यादगार है।

बाबा कहते बच्चे, अब अपने आपसे शुभ संकल्प करो कि :-

1- हमें पवित्रता की चमकती हुई शमा बन चारों ओर के अपवित्रता के अंधकार को मिटाना है।।

2- हर आत्मा के प्रति शुभभावना, शुभकामना रख मन्सा सकाश देने की सेवा करनी है। मुख से सदा मधुर स्नेह के बोल, उमंग-उत्साह दिलाने वाले बोलने हैं। सुख देना और सुख लेना है।

ऐसे शुभ संकल्पों की सूचक यह स्नेह भरी सुन्दर राखी मधुबन से आप सभी के पास आ रही है। हर एक इतना ही स्नेह वा दिल की भावना से यह सुन्दर राखी स्वीकार करे और अपनी अलौकिक बहिनों से राखी बंधवाते हुए ऐसा अनुभव करे कि मधुबन बेहद घर से मीठे बापदादा और अव्यक्ति स्वरूपा सभी दादियों की ओर से यह राखी मुझ आत्मा को सदा तन-मन से स्वस्थ रहने का वरदान देने के लिए आई है। इस राखी को क्लास में सजाकर रखें तथा दिल में प्यारे बापदादा का स्नेह समाते हुए, स्नेह के सूत्र में बंधकर अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करें।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत स्नेह भरी याद...

ईश्वरीय सेवा में,

B K Ratan Mohini

बी.के. रतनमोहिनी